

● सुनो, समझो और सुनाओ :

६. परिश्रम ही पूजा

इस निबंध में लेखक ने 'परिश्रम ही सफलता की कुंजी है' यह बताते हुए अधिक परिश्रम करने हेतु प्रेरित किया है।



विचार मंथन

॥ श्रम का फल मीठा होता है ॥

परिश्रम ही पूजा है। पूजा तो पूजा ही होती है। पूजा परमात्मा की होती है। इष्टदेव की होती है। इस पर विचार अलग-अलग हो सकते हैं किंतु इसमें दो राय नहीं कि पूजा आलस्यमन नहीं होती। बड़े-बड़े कर्मयोगियों ने कर्म को पूजा माना है। चिंतन की भी राष्ट्र को आवश्यकता होती है परंतु वास्तव में परिश्रम की आवश्यकता इससे कहीं ज्यादा है। बचपन से ही परिश्रम करने का अभ्यास निस्संदेह आपको सफलता की राह पर ले जाता है। यदि आपको आलस्य की आदत पड़ गई तो समझ लीजिए कि आप पतन की ओर जा रहे हैं। दुखों की मार से फिर आपको कोई बचा ही नहीं सकता। कहा गया है- 'आलस्यो हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।'

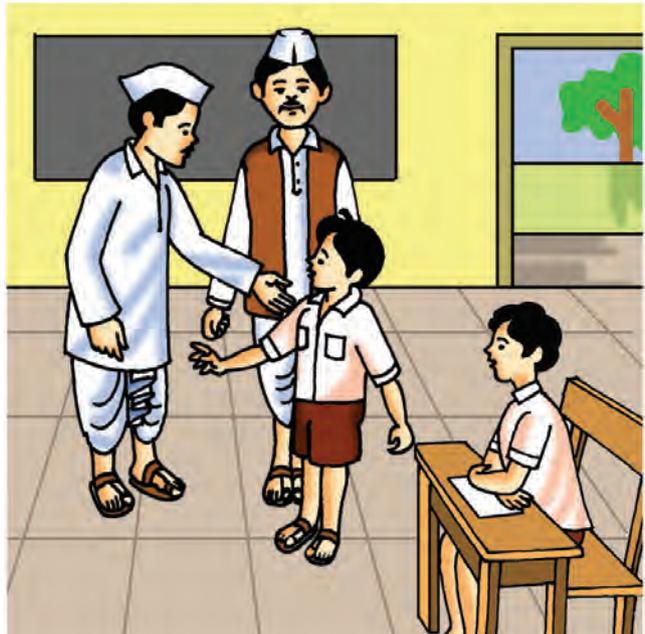
सचमुच आलस्य शरीर में ही बसने वाला हमारा सबसे बड़ा शत्रु है। संत कबीर केवल भक्त या संत ही नहीं थे, वे अपने हाथ से कपड़ा भी बुनते थे। वे परिश्रम को ही पूजा मानते थे। परिश्रम शारीरिक ही नहीं होता, मानसिक और बौद्धिक परिश्रम भी होते हैं। परिश्रमी में आत्मविश्वास होता है। उसे मालूम होता है कि परिश्रम का फल मीठा होता है। फल मिलने में देर हो सकती है परंतु परिश्रम निष्फल नहीं हो सकता।

एक बार एक विद्यालय का परीक्षा परिणाम घोषित किया जा रहा था। एक बालक ने खड़े होकर कहा कि उसका परिणाम घोषित नहीं हुआ। प्रधानाचार्य ने कहा- "जिनके नाम नहीं बोले गए वे उत्तीर्ण नहीं हैं।" बालक दृढ़तापूर्वक बोला- "गुरुदेव ! ऐसा नहीं

हो सकता।" प्रधानाचार्य ने जोर देकर कहा- "बैठ जाओ! तुम अनुत्तीर्ण हो।"

विद्यार्थी फिर भी नहीं बैठा तो प्रधानाचार्य ने उसपर पाँच रुपये जुर्माना लगा दिया। विद्यार्थी ने पुनः निवेदन किया तो जुर्माना दस रुपये कर दिया गया। विद्यार्थी फिर भी नहीं बैठा। कक्षाध्यापक ने भी कहा- "सर ! बालक ठीक कहता है, यह अनुत्तीर्ण नहीं हो सकता। यह पढ़ाई में कठिन परिश्रम करता है।"

इतने में विद्यालय का बाबू दौड़ा-दौड़ा आया और क्षमा माँगते हुए बोला- "सर, टाइप होने में एक नाम छूट गया था।" वह नाम उसी परिश्रमी छात्र का था और उसके अंक भी सर्वाधिक थे। वह बालक और कोई नहीं बल्कि राजेंद्र प्रसाद थे, वही राजेंद्र प्रसाद



□ किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें। विद्यार्थियों से पाठ का मुखर वाचन कराएँ। प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठ के मुद्दों पर चर्चा कराएँ। उनके बचपन के प्रसंग सुनाने के लिए कहें। निबंध के मुद्दे देकर लेखन के लिए प्रोत्साहित करें।



वाचन जगत से

गणतंत्र दिवस पर सम्मानित बच्चों के बहादुरी के प्रसंग पढ़ो और पसंदीदा एक का वर्णन करो।

<https://india.gov.in>

जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। आगे चलकर भारत के प्रथम राष्ट्रपति चुने गए।

x x x x x x

व्याकरण के आचार्य कैयट दिनभर आजीविका के लिए परिश्रम करते और रात्रि को जागकर व्याकरण लिखा करते। इससे उनका स्वास्थ्य गिरने लगा। उनकी पत्नी ने आग्रह किया-“आप समाज के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। घर का खर्च चलाने की चिंता आप मुझपर छोड़ दीजिए।” परिश्रमी व्याकरणाचार्य अपनी पत्नी से बोले-“तुम घर कैसे चलाओगी?” वह भी घोर परिश्रमी थी। “आश्रम की सीमा पर खड़े कुश की मैं रस्सियाँ बनाऊँगी। आप एक दिन जाकर साप्ताहिक बाजार में बेच आइएगा। घर का खर्च इसी से चल जाएगा। आप व्याकरण की रचना के लिए अधिक समय निकाल सकेंगे।” आचार्य कैयट ने पत्नी की बात स्वीकार की। वैयाकरण कैयट बोले-“वाह! तुमने तो बता दिया कि परिश्रम ही पूजा है। श्रम से ही जीवन में

सब साध्य होता है। अब तो शीघ्र सफलता मिलेगी।” आगे चलकर उन्होंने अद्भुत व्याकरण की रचना की। यह पुस्तक आगे चलकर विद्यार्थियों के लिए पथ प्रदर्शक का काम करने लगी।



मैंने समझा

शब्द वाटिका



नए शब्द

राय = सलाह, अभिप्राय
निस्संदेह = बिना किसी आशंका के
जुर्माना = आर्थिक दंड
कुश = एक प्रकार की घास
वैयाकरण = व्याकरण के जानकार

मुहावरा

घर चलाना = घर का खर्च उठाना



अध्ययन कौशल

सुने हुए नए शब्दों की वर्णक्रमानुसार तालिका बनाकर संभाषण एवं लेखन में प्रयोग करो।



स्वयं अध्ययन

सौरऊर्जा पर टिप्पणी तैयार करो और पढ़ो :



www.seci.gov.in



सुनो तो जरा

अपने पसंदीदा विषय पर चार पंक्तियों में कविता बनाओ और सुनाओ।



मेरी कलम से

अपने परिवार में घटित कोई हास्य प्रसंग अपने शब्दों में लिखो।

* किसने, किससे, क्यों कहा है ? लिखो :

(क) “सर, टाइप होने में एक नाम छूट गया था।”

(ग) “घर का खर्च चलाने की चिंता आप मुझपर छोड़ दीजिए।”

(ख) “गुरुदेव ! ऐसा नहीं हो सकता।”

(घ) “वाह ! तुमने तो बता दिया कि परिश्रम ही पूजा है।”



भाषा की ओर

पढ़ो, समझो और करो :

() छोटा कोष्ठक, [] बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक, { } मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक, ^ हंसपद

छोटा कोष्ठक ()

क्रमसूचक अक्षर, अंक, संवादमय लेखों में हावभाव सूचित करने के लिए () इसका प्रयोग करते हैं।

बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक []

लेखन में त्रुटि या पूर्ति बताने, दूसरे कोष्ठक को घेरने के लिए [] इसका प्रयोग करते हैं।

छोटा कोष्ठक ()

१.) सागर- (आश्चर्य से) आप सब मेरा इंतजार कर रहे हैं !
२.) निम्न प्रश्न हल करो :
(अ) १५×२६ (ब) $६०० \div १५$

बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक []

१. रवींद्रनाथ ठाकुर का अनुवादित [अनूदित] साहित्य सब पढ़ते हैं।
२. देखो, आपका पत्र [नमूना (ड)] के अनुसार होना चाहिए।

हंसपद ^

सुंदर मुँटकार्ड बनाया।
१.) अस्मि ने ^ मुँटकार्ड बनाया।
२.) पिता जी कल ^ आएँ।

मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक { }

(१.) { गोदान }
{ निर्मला } प्रेमचंद जी के प्रसिद्ध उपन्यास हैं।
{ गबन }
(२.) { तुलसीदास }
{ कालिदास } महाकवि माने जाते हैं।

उचित विराम चिह्न लगाओ :

१. कामायनी महाकाव्य कवि जयशंकर प्रसाद
२. विशाखा लंदन से दिल्ली आती है हवा जैसी आने की सूचना नहीं देती।
३. बालभारती हिंदी की पुस्तकें हैं।
४. किसी दिन हम भी आपके घर आएँ।

मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक { }

एक साधारण पद से संबंध रखने वाले अलग-अलग पंक्तियों के शब्दों को मिलाने के लिए { } इसका प्रयोग करते हैं।



हंसपद ^

लेखन में जब कोई शब्द छूट जाता है तब उसे पंक्ति के ऊपर लिखकर ^ यह चिह्न लगाते हैं।